9. स्वामी दयानन्दः

आधुनिकभारते समाजस्य शिक्षायाश्च महान् उद्धारकः स्वामी दयानन्दः। आर्यसमाजनामकसंस्थायाः संस्थापनेन एतस्य प्रभूतं योगदानं भारतीयसमाजे गृह्यते। भारतवर्षे राष्ट्रीयतायाः बोधोऽपि अस्य कार्यविशेषः।

आधुनिक भारत में समाज और शिक्षा के महान उद्धारक स्वामी दयानन्द हैं। आर्यसमाज नामक संस्था की स्थापना करने में इनका बहुत बड़ा योगदान भारतीय समाज में लिया जाता है। भारत वर्ष में राष्ट्रीयता का ज्ञान कराना भी इनका कार्य-विशेष माना जाता है।

समाजे अनेकाः दूषिताः प्रथा खण्डयित्वा शुद्धतत्त्वज्ञानस्य प्रचारं दयानन्दः अकरोत्। अयं पाठः स्वामिनो दयानन्दस्य परिचयं तस्य समाजोद्धरणे योगदानं च निरूपयति।

समाज में अनेक दूषित प्रथाओं को खण्डित कर वास्तविकता का ज्ञान का प्रचार दयानन्द ने किया। यह पाठ स्वामी दयानन्द के परिचय और समाज उद्धार में उनका योगदान को स्पष्ट किया है।

मध्यकाले नाना कुत्सितरीतयः भारतीयं समाजम् अदूषयन्। जातिवादकृतं वैषम्यम्, अस्पृश्यता, धर्मकार्येषु आडम्बरः, स्त्रीणामशिक्षा, विधवानां गर्हिता स्थितिः, शिक्षायाः अव्यापकता इत्यादयः दोषाः प्राचीनसमाजे आसन्। अतः अनेके दलिताः हिन्दुसमाजं तिरस्कृत्य धर्मान्तरणं स्वीकृतवन्तः।

मध्य काल में अनेक गलत रीति-रिवाजों से भारतीय समाज दूषित हो गया था। जातिवाद से किया गया विषमता, छुआ-छूत, धर्म कार्यों में आडम्बर, स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की निन्दनीय स्थिति, शिक्षा की कमी इत्यादि अनेक दोष समाज में थे। अतः अनेक दलित हिन्दू समाज अपमानित होकर धर्म परिवर्तन करना स्वीकार लिया।

एतादृशे विषमे काले ऊनविंशशतके केचन धर्मोद्धारकाः सत्यान्वेषिणः समाजस्य वैषम्यनिवारकाः भारते वर्षे प्रादुरभवन्। तेषु नूनं स्वामी दयानन्दः विचाराणां व्यापकत्वात् समाजोद्धरणस्य संकल्पाच्च शिखर-स्थानीयः।

इस प्रकार के विषम समय में उन्नसवीं सदी में कुछ धर्म उद्धारक, सत्य की खोज करने वाले तथा समाज की विषमता को दूर करने वाले भारतवर्ष में उत्पन्न हुए। उनमें अवश्य स्वामी दयानन्द के विचारों का व्यापक प्रभाव तथा समाज-उद्धार के संकल्प से उनका स्थान सर्वोच्च है।

स्वामिनः जन्म गुजरातप्रदेशस्य टंकरानामके ग्रामे 1824 ईस्वी वर्षेऽभूत्। बालकस्य नाम मूलशंकरः इति कृतम्। संस्कृतशिक्षया एवाध्ययनस्यास्य प्रारम्भो जातः। कर्मकाण्डिपरिवारे तादृश्येव व्यवस्था

तदानीमासीत्। शिवोपासके परिवारे मूलशंकरस्य कृते शिवरात्रिमहापर्व उद्बोधकं जातम्।

स्वामी जी का जन्म गुजरात प्रदेश के 'टंकरा' नामक गाँव में 1824 ई0 हुआ था। बालक का नाम 'मूलशंकर' रखा गया। संस्कृत शिक्षा से ही अध्ययन प्राप्त हुआ। उस समय कर्मकाण्डी परिवार में एसी ही व्यवस्था थी। शिव के उपासक परिवार में शिवरात्रि महापर्व मूलशंकर के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ।

रात्रिजागरणकाले मूलशंकरेण दृष्टं यत् शंकरस्य विग्रहमारुह्य मूषकाः विग्रहार्पितानि द्रव्याणि भक्षयन्ति। मूलशंकरोऽचिन्तयत् यत् विग्रहोऽयमकिंचित्करः। वस्तुतः देवः प्रतिमायां नास्ति। रात्रिजागरणं विहाय मूलशंकरः गृहं गतः। ततः एव मूलशंकरस्य मूर्तिपूजां प्रति अनास्था जाता। वर्षद्वयाभ्यन्तरे एव तस्य प्रियायाः स्वसुर्निधनं जातम्।

रात्री जागरण के समय मूलशंकर द्वारा देखा गया कि शिव की मूर्ति पर चढ़ाए गए प्रसाद को चूहा खा रहा है। मूलशंकर ने सोचा कि यह मूर्ति कुछ भी करने वाला नहीं है। वास्तव में देवता प्रतिमा में नहीं है। रात्री जागरण छोड़कर मूलशंकर घर चला गया। उसी समय से मूलशंकर के हृदय में मूर्ति पूजा के प्रति आस्था खत्म हो गया। दो वर्ष के अंदर ही उनके प्रिय बहन का निधन हो गया।

ततः मूलशंकरे वेराग्यभावः समागतः। गृहं परित्यज्य विभिन्नानां विदुषां सतां साधूनांच संगतौ रममाणोऽसौ मथुरायां विरजानन्दस्य प्रज्ञाचक्षुषः विदुषः समीपमगमत्। तस्मात् आर्षग्रन्थानामध्ययनं प्रारभत।

इसके बाद मूलशंकर में वैराग्य भाव आ गया। घर त्यागकर विभिन्न विद्वानों , सज्जनों और साधुओं की संगति में घूमते हुए वे मथुरा में विरजानन्द नामक अन्धा विद्वान के पास गये। उनसे वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

विरजानन्दस्य उपदेशात् वैदिकधर्मस्य प्रचारे सत्यस्य प्रचारे च स्वजीवनमसावर्पितवान्। यत्र-तत्र धर्माडम्बराणां खण्डनमपि च चकार। अनेके पण्डिताः तेन पराजिताः तस्य मते च दीक्षिताः।

विरजानन्द के उपदेश से उपदेशित होकर वेदिक धर्म और सत्य के प्रसार में अपने जीवन को समर्पित कर दिया। जहाँ-तहाँ धर्म-आडम्बर का खण्डन भी उन्होने किया। अनेक पंडितों ने उनसे पराजित होकर उनके मत में दीक्षा प्राप्त की।

स्त्रीशिक्षायाः विधवाविवाहस्य मूर्तिपूजाखण्डनस्य अस्पृश्यतायाः बालविवाहस्य च निवारणस्य तेन महान् प्रयासः विभिनैः समाजोद्धारकैः सह कृतः। स्वसिद्धान्तानां संकलनाय सत्यार्थप्रकाशनामकं ग्रन्थं राष्ट्रभाषायां विरच्य स्वानुयायिनां स महान्तमुपकारं चकार।

स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, मूर्ति-पूजा खण्डन, छुआ-छूत और बाल-विवाह निवारण का महान प्रयास

उनके द्वारा विभिन्न समाज उद्धारको के साथ किया गया। अपने सिद्धांत का संकलन करने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ को हिन्दी भाषा में रचना कर अपने अनुयायी लोगों का बहुत बड़ा उपकार किया।

किंच वेदान् प्रति सर्वेषां धर्मानुयायिनां ध्यानमाकर्षयन् स्वयं वेदभाष्याणि संस्कृतहिन्दीभाषयोः रचितवान्। प्राचीनशिक्षायां दोषान् दर्शयित्वा नवीनां शिक्षा पद्धतिमसावदर्शत्। स्वसिद्धान्तानां कार्यान्वयनाय 1875 ईस्वी वर्षे मुम्बईनगरे आर्यसमाजसंस्थायाः स्थापनां कृत्वा अनुयायिनां कृते मूर्त्तरूपेण समाजस्य संशोधनोद्देश्यं प्रकटितवान्।

वेदों के प्रति अनुयायियों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए वेद का भाषा संस्कृत-हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा। 1875 ई0 में अपने सिद्धांत के प्रचार-प्रसार के लिए मुम्बई में आर्य-समाज की स्थापना करके अनुयायियों के समक्ष उद्देश्य प्रकट किया।

सम्प्रति आर्यसमाजस्य शाखाः प्रशाखाश्च देशे विदेशेषु च प्रायेण प्रतिनगरं वर्तन्ते। सर्वत्र समाजदूषणानि शिक्षामलानि च शोधयन्ति। शिक्षापद्धतौ गुरुकुलानां डी॰ ए॰ वी॰ (दयानन्द एंग्लो वैदिक) विद्यालयानांच समूहः स्वामिनो दयानन्दस्य मृत्योः (1883 ईस्वी) अनन्तरं प्रारब्धः तदनूयायिभिः।

वर्तमान समय में आर्यसमाज की शाखा-प्रशाखा देश तथा विदेशों के प्रायः सभी नगरों में विद्यमान है। सब जगह समाज में स्थित दोषों और गंदगियों को शुद्ध कर रहा है। शिक्षा पद्धति में गुरूकुलों का डी0 ए0 वी0 (दयानन्द-एंग्लो-वैदिक) विद्यालयों का समुह स्वामी दयानन्द की मृत्यु 1883 ई0 के बाद अनके अनुयायियों के द्वारा प्रारंभ किया गया।

वर्तमानशिक्षापद्धतौ समाजस्य प्रवर्तने च दयानन्दस्य आर्यसमाजस्य च योगदानं सदा स्मरणीमस्ति।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में और समाज के परिवर्त्तन में दयानन्द और आर्य समाज का योगदान सदा स्मरणीय है।

1. आधनिक भारत को स्वामी दयानंद का क्या योगदान है?

उत्तर⇒ आधुनिक भारत के समाज और शिक्षा के महान उद्धारक स्वामी दयानंद हैं। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता को दूर कर एक नये समाज की स्थापना की है। जातिवाद, अस्पृश्यता,

धर्मकार्यों में आडम्बर आदि अनेक विषमताएँ थीं जिनसे समाज ग्रसित था । कर्मकांडी परिवार में जन्म लेने वाले स्वामी दयानंद को शिवरात्रि पर्व की रात्रि में अपने ज्ञान का उद्बोधन हुआ । बहन के निधन के बाद इनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया । विरजानन्द का सान्निध्य पाकर वैदिक 'धर्मप्रचार एवं सत्य के प्रसार में अपने जीवन को अर्पित कर दिया। भारतवर्ष में इन्होंने राष्टीयता को लक्ष्य बनाकर भारतवासियों के लिए पथप्रदर्शक का काम किया । दूषित प्रथा को खत्म कर शुद्ध तत्वज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। वैदिक धर्म एवं सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ की रचना कर भारतवासियों को एक नई शिक्षा नीति की ओर अभिप्रेत किया ।

2. कौन-सी घटना ने स्वामी दयानंद की जीवन दिशा को निर्धारित कर दिया?

उत्तर⇒ स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। पिताजी स्वयं संस्कृत के उत्कट विद्वान् थे। परिवार में कर्मकाण्ड के प्रति आस्था थी। एक दिन शिवरात्रि के शुभ अवसर पर रात्रि जागरण का महोत्सव हुआ। शिव की मूर्ति पर इन्होंने एक चूहे को चहलकदमी करते हुए देखा । इनके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। उसी समय इनके मन में मूर्ति पूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न हो गई। कुछ दिनों के बाद उनकी प्रिय बहन का निधन हो गया। इन घटनाओं ने ही उनकी जीवन दिशा को बदल दिया। उनमें वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया।

3. स्वामी दयानन्दः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर⇒ उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी में आविर्भूत समाजसुधारकों में स्वामी दयानन्द अतीव प्रसिद्ध हैं। इन्होंने रूढ़िग्रस्त समाज और विकृत धार्मिक व्यवस्था पर कठोर प्रहार करके आर्य समाज की स्थापना की जिसकी शाखाएँ देश-विदेश में शिक्षा सुधार के लिए भी प्रयत्नशील रही हैं। शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार करते हुए इन्होंने आधुनिक शिक्षा के लिए डी० ए० वी० विद्यालय जैसी संस्थाओं की स्थापना को प्रेरित किया था। इनका जीवनचरित प्रस्तुत पाठ में संलिप्त रूप से दिया गया है।

4. स्वामी दयानन्द कौन थे तथा उन्होंने किस तरह के सामाजिक कार्य किए?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द एक महान समाज-सुधारक संत थे। मध्यकाल में भारत में छुआछूत, अशिक्षा, जातिभेद, धर्म में आडम्बर आदि अनेक कुप्रथाएँ फैली हुई थीं। विधवाओं को काफी कष्ट दिया जाता था। स्वामी दयानन्द ने इन सभी कुरीतियों को दूर करने के लिए आम लोगों के बीच जाकर इन कुरीतियों के खिलाफ जागरण पैदा किया। उन्होंने अपने सिद्धांतों का संकलन 'सत्यार्थप्रकाश' नामक ग्रंथ में किया । शिक्षा-पद्धति के दोषों को दूर करने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। इन सभी कार्यों को करने के लिए उन्होंने 'आर्यसमाज' नामक संस्था की स्थापना की।

5. स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा के विरोधी कैसे बने?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द के माता-पिता भगवान शिव के उपासक थे । महाशिवरात्रि के दिन शिव-पार्वती की पूजा इनके परिवार में विशेष रूप में मनाई जाती थी। एक बार महाशिवरात्रि के दिन इन्होंने देखा कि एक चूहा भगवान शंकर की मूर्ति के ऊपर चढ़कर उनपर चढ़ाए हुए प्रसाद को खा रहा है। इससे उन्हें विश्वास हो गया कि मूर्ति में भगवान नहीं होते । इस प्रकार वे मूर्तिपूजा के विरोधी हो गए।

6. आर्यसमाज की स्थापना किसने की और कब की? आर्य समाज के बारे में लिखें।

उत्तर⇒ आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1885 में मुंबई नगर में की । आर्यसमाज वैदिक धर्म और सत्य के प्रचार पर बल देता है । यह संस्था मूर्तिपूजा का विरोध करती है। आर्यसमाज में नवीन शिक्षा पद्धति को अपनाया । डी०ए०वी० नामक विद्यालयों की समूह की स्थापना की। आज इस संस्था की शाखाएँ-प्रशाखाएँ देश-विदेश के प्रायः हरेक प्रमुख नगर में अवस्थित है।

7. स्वामी दयानन्द ने समाज के उद्धार के लिए क्या किया?

उत्तर⇒ स्वामी दयानन्द ने समाज के उद्धार के लिए स्त्री शिक्षा पर बल दिया और विधवा विवाह हेतु समाज को प्रोत्साहित किया। उन्होंने बाल विवाह समाप्त करवाने, मूर्तिपूजा का विरोध और छुआछूत समाप्त कराने का प्रयत्न किया।

8. वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वामी दयानन्द ने क्या किया?

उत्तर⇒ वैदिक धर्म और सत्य के प्रचार के लिए स्वामी दयानन्द ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया । वेदों के प्रति सभी अनुयायियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने वेदों के उपदेशों को संस्कृत एवं हिंदी में लिखा।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. गुजरात- प्रदेश स्थित टंकाराग्राम किसका जन्मस्थल है?

(A) स्वामी विवेकानन्दः

(B) स्वामी विरजानन्दः

(C) स्वामी दयानंद:

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

2. स्वामी दयानंद के गुरु कौन थे?

(A) महानन्द

(B) कबीरदास

(C) बिरजानन्द

(D) शंकर

Ans – (C)

3. दयानन्द किस शताब्दी में जन्म लिए थे?

(A) 17 वीं

(B) 19 वीं

(C) 18 वीं

(D) 20 वीं

Ans – (B)

4. स्वामी दयानन्द की शिक्षा किस भाषा से प्रारंभ हुई?

(A) हिंदी

(B) गुजराती

(C) अंग्रेजी

(D) संस्कृत

Ans – (D)

5. दयानन्द को कौन उपदेश दिये?

(A) विरजानन्द

(B) विवेकानन्द

(C) शंकर

(D) नन्द

Ans – (A)

6. स्वामी दयानन्द किस प्रकार का पाठ है?

(A) लघुकथा

(B) निबंध

(C) काव्य

(D) कथा

Ans – (B)

7. आर्य समाज के संस्थापक कौन थे?

(A) विवेकानंद

(B) रामप्रवेश राम

(C) स्वामी दयानंद

(D) चन्द्रगुप्त

Ans – (C)

8. स्वामी दयानन्द का जन्म किस प्रदेश में हुआ था?

(A) बिहार

(B) महाराष्ट्र

(C) उड़ीसा

(D) गुजरात

Ans – (D)

9. स्वामी दयानन्द किसके संस्थापक थे?

(A) आर्यसमाज

(B) ब्रह्मसमाज

(C) समग्रविकास

(D) संस्कृतसमाज

Ans – (A)

10. स्वामी दयानन्द ने किसकी रचना की है?

(A) वेद

(B) मेघदूतम

(C) सत्यार्थप्रकाश

(D) पुराण

Ans – (C)

11. दयानन्द का निधन कब हुआ?

(A) 1884 ई०

(B) 1885 ई०

(C) 1883 ई०

(D) 1882 ई०

Ans – (C)

12. किसका नाम मूलशंकर था?

(A) विवेकानंद

(B) कालिदास

(C) दयानन्द

(D) बिरजानन्द

Ans – (C)

13. स्वामी दयानन्द का जन्म किस ई० में हुआ था?

(A) 1825

(B) 1850

(C) 1824

(D) 1800

Ans – (C)

14. स्वामी दयानन्द का बचपन का क्या नाम था ?

(A) मूलशंकर

(B) दयानन्द

(C) विवेक

(D) राम

Ans – (A)

15. स्वामी दयानंद का जन्म किस प्रकार के परिवार में हुआ था ?

(A) गृहस्थ

(B) कर्मकाण्ड

(C) किसान

(D) मजदूर

Ans – (B)

16. दयानन्द का परिवार किसका उपासक था?

(A) विष्णु

(B) हनुमान

(C) शिव

(D) गणेश

Ans – (C)

17. कौन हिन्दू समाज से तिरस्कृत होकर धर्म परिवर्तन कर रहा था ?

(A) दरिद्र

(B) दलित

(C) विधवा

(D) कुलीन

Ans – (B)

18. आर्यसमाज की स्थापना किस नगर में किया ?

(A) दिल्ली

(B) कोलकाता

(C) चेन्नई

(D) मुम्बई

Ans – (D)

19. आर्यसमाज की स्थापना किस ई० में हुआ?

(A) 1875

(B) 1870

(C) 1883

(D) 1888

Ans – (A)

20. सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ को किस भाषा में रचना किया?

(A) हिन्दी

(B) बंगला

(C) मराठी

(D) संस्कृत

Ans – (A)

21. किस काल में समाज दूषित हो गया था।

(A) मध्यकाल

(B) प्राचीनकाल

(C) मुगलकाल

(D) गुप्तकाल

Ans – (A)

22. रात्रिजागरण को छोड़कर मूलशंकर कहाँ गया?

(A) वन

(B) घर

(C) विद्यालय

(D) कार्यालय

Ans – (B)

23. किसकी स्थापना 1875 ई० में हुआ?

(A) ब्रह्मसमाज

(B) आर्यसमाज

(C) मंदिर

(D) ग्राम

Ans – (B)

24. किसका प्रचार, दयानन्द ने किया?

(A) शुद्ध तत्व ज्ञान

(B) सामाजिकज्ञान

(C) विज्ञान

(D) गीत

Ans – (A)

25. समाज और शिक्षा के उद्धारक कौन थे?

(A) विवेकानन्द

(B) दयानन्द

(C) कर्ण

(D) रामप्रवेश

Ans – (B)

26. मध्यकाल में किसमें आडम्बर (दिखावा) था ?

(A) गृहकार्य

(B) ग्रंथकार्य

(C) खेलकार्य

(D) धार्मिक कार्य

Ans – (D)

27. कौन मेधावी थे?

(A) छात्रः

(B) नन्दः

(C) दयानन्दः

(D) रामानन्दः

Ans – (C)

28. किसकी शाखा देश-विदेश में है?

(A) ब्रह्मसमाज

(B) आर्यसमाज

(C) विद्यालय

(D) ग्रंथ

Ans – (B)

29. मूलशंकर को किसके प्रति अनास्था हुई?

(A) दुर्गापूजा

(B) सूर्यपूजा

(C) मूर्तिपूजा

(D) शस्त्रपूजा

Ans – (C)

30. कौन प्रसाद को खा रहा था?

(A) चूहा

(B) बाघ

(C) बैल

(D) बकरा

Ans – (A)

31. सत्यार्थप्रकाश के रचनाकार कौन थे?

(A) रामानन्द

(B) कालिदास

(D) दयानन्द

(C) बिरजानन्द

Ans – (D)

32. स्वामी दयानन्द कौन थे?

(A) शिक्षाविद्

(B) समाजोद्धारक

(C) धर्मोपदेशक

(D) राजनीतिज्ञ

Ans – (B)

33. स्वामी दयानन्द का जन्म किस गाँव में हुआ था?

(A) कंटारा

(B) टंकापुर

(C) टंकारा

(D) भीखन टोला

Ans – (C)

34. स्वामी दयानन्द के लिए कौन पर्व उद्बोधक सिद्ध हुआ?

(A) दुर्गापूजा

(B) दीपावली

(C) रामनवमी

(D) शिवरात्ति

Ans – (D)

35. डी०ए० बी० विद्यालय की स्थापना किसने की?

(A) स्वामी विरंजानन्द ने

(B) स्वामी विवेकानन्द ने

(C) राजा राममोहन राय ने

(D) स्वामी दयानन्द के अनुयायिक

Ans – (D)

36. मूल शंकर को विरजानन्द के दर्शन कहाँ हुए?

(A) मथुरा में

(B) वृन्दावन में

(C) वाराणसी में

(D) प्रयाग में

Ans – (A)

37. मूल शंकर को मूर्ति पूजा के प्रति अनास्था होने के दूसरे वर्ष में किसका निधन हो गया?

(A) मूलशंकर की माता का

(B) मूलशंकर की बहन का

(C) मूलशंकर की पिता का

(D) मूलशंकर की पत्नी का

Ans – (B)